पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़

(छ,ग, भासन के अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा स्थापित)
कोनी – बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छ,ग,) 495009 दूरभाष क्रमांक : (07752) 240715
www.pssou.ac.in E-mail-registar@pssou.ac.in

पाठ्यक्रम

बी.ए.

प्रबंधन

VERIFIED

REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

बी.ए. प्रथम वर्ष
प्रबन्ध के सिद्धान्त (प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय 1 : प्रबन्धः अवधारणा, प्रकृति व महत्व

प्रबन्ध का आशय, प्रबन्ध की परिभाषा, प्रबन्ध की विशेषताएँ, प्रबन्ध के उद्देश्य, प्रबन्ध का महत्व, प्रशासन बनाम प्रबन्धन, प्रबन्धनः विज्ञान व कला के रूप में

अध्याय 2 : प्रबन्ध के क्रियात्मक क्षेत्र

हैनरी मिन्टजबर्ग के अनुसार प्रबन्धकीय भूमिकाएँ, प्रबन्ध के क्रियात्मक क्षेत्र, संगठन मे प्रबन्ध के उत्तरदायित्व, मैनेजमेन्ट के कार्य

अध्याय 3 : प्रबन्धकीय विचारधारा का विकास

प्रतिष्ठित शैली, वैज्ञनिक प्रबन्ध-सिद्धान्त, अफसरशाही प्रबन्धन-सिद्धान्त, प्रशासनिक प्रबन्धन, हैनरी फेयोल (थ्यारी आफ एडमिनिस्टेशन), सोशल सिस्टम एप्रोच, मानव-सम्बन्ध आदोलन, हॉथॉर्न प्रयोग, पीटर. एफ. ड्रकर, द मैनेजमेन्ट सांइस स्कूल, मैनेजमेन्ट थ्योरी में हालिया विकास, सिस्टम्स एप्रोच, प्रासंगिकता विचारधारा (Contingancy Approach), उत्कृष्ट कम्पनीज एप्रोच/7.5 फ्रेमवर्क

अध्याय 4 : नियोजन : अवधारणा, प्रक्रिया एवं प्रकार

नियोजन की विभिन्न अवधारणाएँ, नियोजन का आशय, परिभाषाएँ, विशेषताएँ, उद्देश्य, नियोजन के सिद्धान्त, प्रकृति, प्रक्रिया, नियोजन के भेद, नियोजन का महत्व, नियोजन का दोष, आदर्श योजना की विशेषताएँ

अध्याय 5 : निर्णयन

निर्णय लेने की प्रक्रिया क्या है? प्रबन्धकीय निर्णय करने के गुण, प्रबन्धकीय निर्णयों के प्रकार, निर्णय लेने के घटक, निर्णय लेना एक टेढ़ी-मेढ़ी प्रक्रिया है, निर्णय लेने की प्रक्रिया, निर्णयों के प्रकार, निर्णय लेने की तकनीक

अध्याय 6 : उद्देश्यों द्वारा प्रबन्धन

'उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध' का अर्थ, परिभाषाएँ, विशेषताएँ, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध की प्रक्रिया, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध उपागम की पद्धति, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध के लाभ, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध की सीमाएँ, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध को प्रभावी बनाने के उपाय

अध्याय 7 : समामेलित नियोजन

समामेलित नियोजन का आशय, परिभाषाएँ, समामेलित नियोजन की विशेषताएँ, समामेलित नियोजन के प्रकार, लाभ, दोष

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय 8 : वातावरण विश्लेषण एवं निदान

इतिहास एवं विकास, अर्थ एवं परिभाषा, महत्व, क्षेत्र एवं प्रकृति, प्रकार, अन्य विषयों से सम्बन्ध (व्यावसायिक वातावरण को सुदृढ़ बनाने के सुझाव), विशेषताएँ, कार्य, उदाहरण

अध्याय 9 : रणनीति निरूपण

रणनीति निर्माण का आशय, रणनीति निर्माण के उपागम, वैकल्पिक रणनीतियाँ, सार्वजनिक रणनीतियाँ, बाह्य वृद्धि रणनीतियाँ, विलयन तथा अधिग्रहण व्यूहरचना की सफलता हेतु सुझाव, संयुक्त साहस व्यूहरचना

खण्ड - II

अध्याय 10 : संगठन

विकास, संगठन की परिभाषाएं, संगठन का अर्थ एवं प्रकृति, सिस्टमों के सिस्टम के रूप में संगठन, संगठन के चरण, संगठन के सिद्धान्त, संगठन का महत्व, औपचारिक संगठन, अनौपचारिक संगठन, औपचारिक तथा अनौपचारिक संगठन के भेद

अध्याय 11 : अधिकार एवं उत्तरदायित्व

अधिकार - आशय एवं परिभाषाएँ, अधिकार की विशेषताएँ, प्रकार, प्रबन्धन अधिकार के स्रोत अथवा सिद्धान्त, अधिकार प्रयोग की सीमाएँ, उत्तरदायित्व, विशेषताएँ, अधिकार व उत्तरदायित्व में भेद, प्रकार, उत्तरदायित्व का प्रत्योजन, अधिकार व उत्तरदायित्व में सम्बन्ध

अध्याय 12 : केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण

अधिकार का विकेन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण के लक्षण, विकेन्द्रीकरण की ओर ले जाने वाले फैक्टर, विकेन्द्रीकरण की सीमाएँ, डीसेन्ट्रलाइजेशन के लाभ, डीसेन्ट्रलाइजेशन से हानियाँ, स्वामित्व का केन्द्रीकरण, केन्द्रीकरण की विशेषताएँ, केन्द्रीकरण का महत्व व उसकी विशेषतायें, सेन्ट्रलाइजेशन के दोष, केन्द्रीकरण बनाम विकेन्द्रीकरण, सेन्ट्रलाइजेशन बनाम डीसेन्ट्रलाइजेशन, परिवर्तन-प्रबन्ध क्यों, क्या और कैसे, परिवर्तन का अर्थ एवं प्रकृति, चेन्ज मैनेजमेण्ट की परिभाषा, परिवर्तन को मैनेज करने का काम

अध्याय 13 : विभागीयकरण

आशय, विभागों को बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें, महत्व, विभागीय के आधार

अध्याय 14 : संगठन संरचना

संगठन संरचना का अर्थ? संगठन संरचना की परिभाषा, संरचना का महत्त्व, संगठन-संरचना तथा संस्कृति की भूमिका, संगठनात्मक संरचना के रूप, संगठन चार्ट, ऑर्गनाइजेशन चार्ट में सूचना , ऑर्गनाइजेशन स्ट्रक्चर का प्रस्तुतीकरण, ऑर्गनाइजेशन चार्ट के लाभ, ऑर्गनाइजेशन चार्ट की सीमाएँ, संरचना का निर्धारण, स्पैन ऑफ कन्ट्रोल, नियंत्रण का विस्तार को प्रभावित करने वाले कारक, संगठन-संरचना पर स्पैन ऑफ कन्ट्रोल का प्रभाव

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

खण्ड - III

अध्याय 15 : अभिप्रेरणा

परिभाषाएँ, अभिप्रेरणा की आवश्यकता एवं महत्व, अभिप्रेरणा तकनीक, अभिप्रेरक घटक, एक प्रोत्साहन के रूप में पैसा, अच्छे अभिप्रेरणा तंत्र की आवश्यकताएँ, अभिप्रेरणा सिद्धान्त

अध्याय 16 : नेतृत्व

नेतृत्व की परिभाषा और अर्थ, नेतृत्व बनाम प्रबन्धन, नेतृत्व तथा प्रबन्धन में अन्तर, नेतृत्व का महत्व, नेतृत्व की विशेषताएँ, नेतृत्व शैली, नेतृत्व के प्रति दृष्टिकोण, व्यावहारिकी सिद्धान्त, प्रबन्धकीय ग्रीड, अनिश्चय सिद्धान्त, हर्सी और बैंकार्ड का परिस्थिति संरचना मॉडल, पाथ गोल सिद्धान्त, परिवर्तनीय नेतृत्व

अध्याय 17 : संचार

संचार का आशय, संचार की परिभाषाएँ, संचार के तत्व, व्यावसायिक संचार के उद्देश्य, संचार का क्षेत्र, व्यावसायिक संचार के महत्व में वृद्धि के कारण, प्रबन्धकों के लिए संचार का महत्व, संचार प्रक्रिया का आशय, संचार प्रक्रिया के संघटक, प्रतिपुष्टि के तरीके, प्रतिपुष्टि का महत्व, प्रभावी प्रतिपुष्टि कौशल को विकसित करने हेतु सुझाव, आन्तरिक संचार, बाह्य संचार, संचार की दिशा, समतल अथवा क्षैतिज संचार, आरेखी या कर्णीय सम्प्रेषण, अन्तरवैयक्ति संचार, लिखित संचार, अमौखिक संचार, औपचारिक संचार, अनौपचारिक संचार, अंगूरीलता सम्प्रेषण, विभिन्न प्रकारों की बाधाएँ, संचार की बाधाएँ, बाधाओं को दूर करने हेतु सुझाव

खण्ड - IV

अध्याय 18 : प्रबन्धकीय नियंत्रण

नियन्त्रण की परिभाषा, महत्व, अच्छे नियंत्रण की विशेषताएँ, उद्देश्य, नियोजन एवं नियंत्रण में सम्बन्ध, नियंत्रण प्रक्रिया, तकनीकें

अध्याय 19 : परिवर्तन प्रबन्ध

परिवर्तन प्रबन्ध : आशय एवं परिभाषा, परिवर्तन का स्वभाव, प्रकार, परिवर्तन के प्रभाव, परिवर्तन के प्रतिरोध, प्रतिरोध के कारण, परिवर्तन के प्रतिरोध को हटाना

अध्याय 20 : प्रबन्ध के उभरते आयाम

नये आयामों/चुनौतियों के उभरने के कारण

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

व्यावसायिक पर्यावरण

(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय -1 भारतीय व्यावसायिक पर्यावरण अवधारणा, संघटक एवं महत्व

व्यावसायिक पर्यावरण : आशय एवं परिभाषाएँ, व्यावसायिक पर्यावरण के मुख्य लक्षण/प्रति, व्यावसायिक पर्यावरण का महत्व, व्यवसाय के आधार,व्यावसायिक पर्यावरण के संघटक, आर्थिक एवं अनार्थिक वातावरण में सम्बन्ध, भारतीय व्यावसायिक पर्यावरण, भारतीय प्रबन्धकों के समक्ष चुनौतियाँ, चुनौतियों का सामना करना , व्यावसायिक पर्यावरण की चुनौतियाँ तथा भारतीय अर्थव्यवस्था

अध्याय - 2 भारत में राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय का आशय एवं परिभाषाएँ, राष्ट्रीय आय का महत्व, राष्ट्रीय आय की धारणाएँ, भारत में राष्ट्रीय आय के मापन की विधियाँ, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में कठिन इयाँ, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में सुधार हेतु सुझाव, भारत में राष्ट्रीय आय की धीमी वृद्धि के कारण, भारत में राष्ट्रीय आय बढ़ाने हेतु सुझाव

अध्याय - 3 बचत तथा विनियोग

बचत का आशय, बचत की दर, भारत में बचत की प्रवृत्तियाँ, भारत में बचत के स्रोत, बचतों के निर्धारक तत्व, बचत दर निम्न होने के कारण, बचत में वृद्धि के लिए सुझाव,विनियोग (पूँजी निर्माण), बचत का विनियोग, पूँजी निर्माण के घटक, भारत में विनियोग की प्रवृत्तियाँ अथवा भारत में पूँजी निर्माण, भारत में पूँजी निर्माण कम होने केकारण, भारत में पूँजी निर्माण के प्रोत्साहन हेतु सुझाव,

अध्याय - 4 भारतीय उद्योग : सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र

सार्वजनिक क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र की विशेषताएँ, सार्वजनिक उपक्रमों की आवश्यकतासार्वजनिक उपक्रमों का औचित्य, भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का विकास, सार्वजनिक क्षेत्र की उपाधियाँ अथवा निष्पादकता, सार्वजनिक क्षेत्र की न्यून निष्पादकता के कारण सार्वजनिक क्षेत्र की निष्पादकता में सुधार हेतु सुझाव, नवीन औद्योगिक नीति 1991 तथा सार्वजनिक क्षेत्र, नवरत्न, सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश, सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश का औचित्य, विनिवेश आयोग, निजी क्षेत्र आशय एवं विशेषताएँ, निजी क्षेत्र का महत्व, निजी क्षेत्र का महत्व, भारत में निजी क्षेत्र की संरचना, निजी क्षेत्र की उपलब्धियां, निजी क्षेत्र के दोष, निजी क्षेत्र के सुधार हेतु सरकारी प्रयास, निजी क्षेत्र को प्रभावी बनाने के सुझाव, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के मध्य समन्वय, सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र में अन्तर

अध्याय - 5 भारत में विदेशी व्यापार

VERIFIED

भारत के विदेशी व्यापार की संरचना, भारत के विदेशी व्यापार की मात्रा, भारत के विदेशी व्यापार की दशा, भारत के विदेशी व्यापार की नवीनतम प्रवृत्तियाँ

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSOU, CG Bilaspur

अध्याय - 6 भुगतान सन्तुलन

आशय एवं परिभाषाएँ, विशेषताएँ, भुगतान सन्तुलन की मदें, भुगतान सन्तुलन का महत्व, भुगतान सन्तुलन में असंतुलन, भुगतान सन्तुलन की असाम्यता के कारण, भुगतान सन्तुलन के समाधान हेतु उठाए गए कदम, भुगतान सन्तुलन की असाम्यता को दूर करने हेतु सुझाव, भारत के भुगतान सन्तुलन की स्थिति

अध्याय - 7 भारत में मुद्रा

अध्ययन के उद्देश्य, मुद्रा का आशय एवं परिभाषाएँ, मुद्रा की माँग, मुद्रा की माँग को प्रभावित करने वाले तत्व, मुद्रा की पूर्ति, मुद्रा की पूर्ति की बहिष्कृत मदें, मुद्रा की पूर्ति के स्कन्ध तथा प्रवाह में अन्तर, मुद्रा पूर्ति के माप क, मुद्रा पूर्ति के निर्धारक तत्व, उच्च-शक्ति मुद्रा

अध्याय - 8 भारत में वित्त

वित्त का आशय, भारतीय वित्तीय प्रणाली की संरचना, विनियामक संस्थाएँ, वित्तीय बाजार

अध्याय - 9 भारत में कीमतें

कीमत प्रवृत्तियाँ : आयोजन काल में, मूल्य वृद्धि के कारण, कीमतों में वृद्धि के प्रभाव,सरकार द्वारा कीमत नियं त्रण की दिशा में किए गए प्रयास, मूल्य वृद्धि रोकने हेतु सुझाव

खण्ड - II

अध्याय - 10 आर्थिक संवृद्धि की विभिन्न समस्याएँ

अध्ययन के उद्देश्य, आर्थिक संवृद्धि, आर्थिक विकास तथा आर्थिक प्रगति, आर्थिक विकास तथा आर्थिक विकास संवृद्धि में भेद, आर्थिक विकास के अभिसूचक, भारत मेंआर्थिक विकास की समस्याएँ

अध्याय - 11 भारत में बेरोजगारी

बेरोजगारी का आशय, बेरोजगारी के प्रकार, भारत में बेरोजगारी की सीमा (1993-94 तक), बेरोजगारी अनुमान (1993-94 के बाद), देश में रोजगार कार्यालयों में पंजीकृतबेरोजगारी का विवरण, कुल रोजगार और संगठित क्षेत्र में उपलब्ध रोजगार, बेरोजगारीके प्रभाव, बेरोजगारी के कारण, बेरोजगारी मिटाने के उपाय, रोजगार हेतु सरकारी उपाय,

अध्याय - 12 निर्धनता

अध्ययन के उद्देश्य, निर्धनता, गरीबी रेखा का अभिप्राय, निर्धनता के कारण, निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम, निर्धनता निवारण कार्यक्रमों का मूल्यांकन, निर्धनता दूर करने हेतु सुझाव

अध्याय - 13 क्षेत्रीय असन्तुलन

क्षेत्रीय असन्तुलन का आशय, क्षेत्रीय असन्तुलन के सूचक, क्षेत्रीयअसन्तुलन के कारणक्षेत्रीय असन्तुलनों का प्रभाव, सरकार द्वारा संतुलित क्षेत्रीय विकास हेतु उठाए गए कदम, क्षेत्रीय असन्तुलन को दूर करने के उपाय अथवा भारत में, सन्तुलित क्षेत्रीय विकास हेतु सुझाव

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय - 14 सामाजिक अन्याय

सामाजिक अन्याय का आशय, सामाजिक अन्याय समाप्त करने के प्रयास, आर्थिक विकास तथा सामाजिक अन्याय, सामाजिक न्यायमुक्त विकास में कठिनाइयाँ, सामाजिक न्यायमुक्त आर्थिक विकास हेतु सुझाव

अध्याय - 15 मुद्रा-स्फीति अथवा मुद्रा-प्रसार

मुद्रा प्रसार का आशय, मुद्रा प्रसार की परिभाषाएँ, मुद्रा प्रसार की विशेषताएँ, मुद्रा प्रसार के प्रकार, मुद्रा प्रसार की तीव्रता (गति), मुद्रा प्रसार के कारण, मुद्रा प्रसार के प्रभाव, मुद्रा प्रसार को रोकने के उपाय, मुद्रा-स्फीति और आर्थिक विकास, मुद्रा- स्फीति के विरुद्ध सरकारी नीति

अध्याय - 16 समानान्तर अर्थव्यवस्था अथवा काला धन

समानान्तर अर्थव्यवस्था का आशय, काले धन का आशय एवं प्रकृति, भारत में काले धन का उद्‌भव तथा श्रोत, समानान्तर अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति के कारण, समानान्तर अर्थव्यवस्था के दुष्प्रभाव, समानान्तर अर्थव्यवस्था को रोकने हेतु उठाए गए कदम, समानान्तर अर्थव्यवस्था की समस्या के सुधार के लिए सुझाव

अध्याय - 17 औद्योगिक रुग्णता

औद्योगिक रुग्णता की परिभाषाएँ, औद्योगिक रुग्णता के कारण, औद्योगिक रुग्णता के प्रतीक, औद्योगिक रुग्णता के परिणाम, औद्योगिक रुग्णता रोकने हेतु उपाय, सरकार की नीति, औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्संस्थापन बोर्ड, औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्संरचना बोर्ड के कार्य

खण्ड - III

अध्याय - 18 सरकार की भूमिका

व्यवसाय में सरकार की भूमिका, सरकार की बदलती हुई भूमिका,

अध्याय - 19 मौद्रिक नीति

मौद्रिक नीति का आशय एवं परिभाषाएँ, मौद्रिक नीति के उद्देश्य, मौद्रिक नीति के प्रकार, मौद्रिक नीति का महत्व, उदारीकरण से पूर्व मौद्रिक नीति, आर्थिक सुधारों के पश्चात मौद्रिक नीति

अध्याय - 20 राजकोषीय नीति

राजकोषीय नीति का आशय एवं परिभाषाएँ, राजकोषीय नीति की विशेषताएँ, राजकोषीय नीति के उद्देश्य, राज कोषीय नीति के संघटक, भारत में राजकोषीय नीति, भारतीय राजकोषीय नीति के प्रभाव, भारतीय राजकोषीय नीति की कमियाँ, भारतीय राजकोषीय नीति में सुधार हेतु सुझाव

अध्याय - 21 औद्योगिक नीति

औद्योगिक नीति का आशय, भारत की औद्योगिक नीति, औद्योगिक नीति 1991, औद्योगिक नीति 1991 के उद्देश्य, औद्योगिक नीति 1991 की बातें, औद्योगिक नीति 1991 के गुण, औद्योगिक नीति 1991 की कमियाँ

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय - 22 औद्योगिक लाइसेन्सिंग

औद्योगिक लाइसेन्स का आशय, उद्देश्य, कानूनी आधार, उद्योग विकास एवं नियमन अधिनियम, 1951, लाइसेन्स नीति, 1991 तथा उद्योग विकास एवं नियमन अधिनियम, नई औद्योगिक लाइसेन्सिंग नीति, औद्योगिक लाइसेन्सिंग नीति 1991 की प्रमुख विशेषताएँ, लाइसेन्स प्रणाली में सुधार हेतु सुझाव

अध्याय - 23 निजीकरण

निजीकरण, निजीकरण की विशेषताएँ, निजीकरण के उद्देश्य, निजीकरण के लिए अपनायी जाने वाली तकनीकें /विधियाँ, निजीकरण के लाभ, निजीकरण के दोष, भारत में निजीकरण, भारत में निजीकरण को प्रेरित करने वा ले कारक, उदारीकरण का आशयउदारीकरण के उद्देश्य, उदारीकरण के उपाय या तरीके, वैश्वीकरण का आशय , वैश्वीकरण के अंग, वैश्वीकरण की विशेषताएँ, भारत में वैश्वीकरण को प्रेरित करने वाले कारण, वैश्वीकरण का महत्व, वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव, भारतीय अर्थव्यवस्था कावैश्वीकरण

अध्याय - 24 अवमूल्यन

अवमूल्यन का अर्थ एवं परिभाषा, अवमूल्यन के कारण, अवमूल्यन के उद्देश्य, अवमूल्यन की सफलता के लिए आवश्यक दशाएँ, अवमूल्यन प्रभाव

अध्याय - 25 निर्यात-आयात नीति

निर्यात-आयात नीति का आशय, निर्यात-आयात नीति का महत्व, निर्यात-आयात नीति के प्रकार, नवीन निर्यात-आयात नीति

अध्याय - 26 विदेशी विनियोग का नियमन तथा विदेशी सहयोग

अध्ययन के उद्देश्य, विदेशी विनिमय प्रबन्धन अधिनियम 2000, फेरा व फेमा में अन्तरफेमा के प्रमुख प्रावधान, विदेशी निवेश के प्रकार, विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी प्रयास, नई औद्योगिक नीति तथा विदेशी तकनीकी ठहराव, विदेशी सहयोग के दोष, आर्थिक विकास में विदेशी पूँजी व सहयोग की भूमिका, भारत में विदेशी पूँजी की समस्याएँ, सुझाव

अध्याय - 27 पंचवर्षीय योजनाएँ

दृष्टि तथा युक्ति, ग्यारहवीं योजना के प्रमुख लक्ष्य, समष्टि आर्थिक रूपरेखा, ग्यारहवींपंचवर्षीय योजना की वित्तीय संरचना, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में विभिन्न क्षेत्रों का सार्वजनिक क्षेत्र परिव्यय, रोजगार परिप्रेक्ष्य, खण्डीय नीतियाँ, बारहवीं पंचवर्षीय योजना, बारहवीं पंचवर्षीय योजना में संसाधनों का आवंटन, वित्त व्यवस्था, आधरिक संरचना निवेश, रणनीति, योजना की मुख्य बातें

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

खण्ड - IV

अध्याय - 28 अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक पर्यावरण, विश्व व्यापार की प्रवृत्तियाँ तथा विकासशील देशों की समस्याएँ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक वातावरण आशय एवं परिदृश्य, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक वातावरण केपरिवर्तनशील आयाम, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक पर्यावरण तथा भारत, विश्व व्यापार प्रवृत्तियाँ, निर्यात व्यापार की संरचना, विश्व का आयात-व्यापार, विकासशील देशों कीविदेशी व्यापार सम्बन्धी समस्याएँ

अध्याय - 29 विदेशी व्यापार एवं आर्थिक संवृद्धि

विदेशी व्यापार का आशय एवं परिभाषाएँ, विदेशी व्यापार की आवश्यकता एवं महत्व, विदेशी व्यापार की हानि याँ

अध्याय - 30 अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समूह

अध्ययन के उद्देश्य, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समूह का आशय, यूरोपियन साझा बाजार, यूरोपियन साझा बाजार तथा भारत, यूरोपियन मुक्त व्यापार क्षेत्र, एशिया प्रशान्त आर्थिक सहयोग, उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार ठहराव, दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र संघ, हिन्द महासागर तट क्षेत्रीय सहयोग

अध्याय - 31 व्यापार एवं प्रशुल्क विषयक सामान्य ठहराव (गैट) तथा विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू० टी० ओ०)

गैट, गैट के उद्देश्य, गैट के सिद्धान्त, गैट के विभिन्न दौर, गैट की उपलब्धियाँ, गैट की असफलताएँ, गैट तथा भारत, विश्व व्यापार संगठन, कार्य, उद्देश्य, गैट व विश्व व्यापार संगठन में अन्तर, संगठन एवं प्रबन्ध, विश्व व्यापार संगठन एवं भारतीय कृषि, बौद्धिक सम्पदा अधिकार सुरक्षा, विश्व व्यापार संगठन तथा भारत

अध्याय - 32 विश्व बैंक

विश्व बैंक क्या है, विश्व बैंक के उद्देश्य, विश्व बैंक का प्रबन्ध एवं संगठन, पूँजी, विश्व बैंक की सदस्यता, विश्व बैंक के कार्य, विश्व बैंक की कार्यप्रणाली, विश्व बैंककी सफलताएँ या उपलब्धियाँ, असफलताएँ, विश्व बैंक तथा भारत

अध्याय - 33 अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की स्थापना, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के उद्देश्य, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के कार्य, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का संगठन, प्रबन्ध एवं मताधिकार, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की सदस्यता, पूँजी तथा अभ्यंश, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का प्रचालन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष मूल्यांकन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा विकाशील देश, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा भारत

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय - 34 विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश क्या है?, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश एवं भारत, भारत के विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में कुछ प्रमुख देशों का भाग, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए उठाए गए कदम, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अन्त र्प्रवाह, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का उद्योगानुसार अन्तर्प्रवाह, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली, अभ्यास प्रश्न।

अध्याय - 35 प्रति व्यापार

प्रति व्यापार का आशय, प्रति व्यापार की तकनीकें, प्रति व्यापार तथा भारत

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

बी. ए. द्वितीय वर्ष
व्यावसायिक संचार
(प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड . I

अध्याय 1 (व्यावसायिक संचार सम्प्रेषण) : आशय व महत्व

संचार का आशय, संचार की परिभाषाएँ, संचार के तत्व, संचार की प्रकृति, व्यावसायिक संचार के उद्देश्य, संचार का क्षेत्र, व्यावसायिक संचार के महत्व में वृद्धि के कारण, प्रबन्धकों के लिए संचार का महत्व,

अध्याय 2 :संचार के मूलरूप

आन्तरिक संचार, बाह्य संचार, संचार का वर्गीकरण, संचार की दिशा, बहु–दिशा सम्प्रेषण, अन्तरवैयक्तिक संचार, लिखित संचार, अमौखिक संचार, संचार के साधन, संचार के लिखित साधन, संचार की दृश्य तकनीकें, संचार माध्यम की पसंद,

अध्याय 3 :संचार की प्रक्रिया, सिद्धांत एवं प्रतिरूप

संचार प्रक्रिया का आशय, संचार प्रक्रिया के संघटक, प्रतिपुष्टि के तरीके, प्रतिपुष्टि की प्रक्रिया, प्रतिपुष्टि का महत्व, प्रभावी प्रतिपुष्टि कौशल को विकसित करने हेतु सुझाव, संचार तथा अन्य विषय, प्रभावी तथा अन्य विषय, संचार के भारतीय प्रतिरूप, संचार के सिद्धांत सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली

अध्याय 4 :संचार संबधि विचारधाराएँ

संचार की सूचना विचारधरा, अन्तर्क्रिया विचारधरा, संव्यवहार विचारधरा, महत्व, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

अध्याय 5 :श्रोता विश्लेषण

श्रोता विश्लेषण का आशय, प्रक्रिया, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

अध्याय 6 :स्व–विकास एवं संचार

स्व–विकास का आशय, स्व–विकास करना, प्रभावी सम्प्रेषण का योगदान, उद्देश्य, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

खण्ड - II

अध्याय 7 :औपचारिक तथा अनौपचारिक संचार

अनौपचारिक संचार, औपचारिक संचार के माध्यम, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

अध्याय 8 :संचार की बाधएँ

विभिन्न प्रकारों की बाधएँ, संचार की बाधएँ, संचार में बाधओं के दुष्प्रभाव, बाधओं के दूर करने हेतु सुझाव, सारांश,

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
BSSOU CG Bilaspur

अध्याय 9 :व्यावसायिक संचार में व्यवहार

भाषण, व्याख्यान की तकनीकें, कुछ व्यावहारिक दिशा निर्देश, सामूहिक विचार–विमर्श, समूह का आशय, समूह के प्रकार, समूह के लक्षण, समूह की आवश्यकता एवं महत्व, विचार–विमर्श, सामूहिक विचार–विमर्श के उद्देश्य, सामूहिक विचार–विमर्श की दशाएँ/शर्ते, गुण/लाभ, दोष/हानियाँ, सेमीनार, सेमीनार की विशेषता, सेमीनार के आयोजन की प्रक्रिया, सम्मेलन, सम्मेलन का आयोजन, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली, स्व–परीक्षा प्रश्न।

खण्ड . III

अध्याय 10 :लेखन कौशल या दक्षता

लेखन दक्षता का आशय, लेखन कुशलता के चरण, प्रभावशाली लेखन के लिए आवश्यक बातें, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

अध्याय 11 :व्यापारिक पत्र (I)

व्यापारिक पत्र के कार्य, व्यापारिक पत्र के उद्देश्य, प्रभावी व्यापारिक पत्र के तत्व, व्यापारिक पत्र की प्रभावशीलता के संघटक, व्यापारिक पत्र के भाग या अंग, व्यापारिक पत्र का स्वरूप ;ढाँचाद्ध, व्यापरिक पत्रो के प्रकार, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

अध्याय 12 :व्यापारिक पत्र (II)

पूछताछ के पत्र, आदेश पत्र, व्यापारिक संदर्भ एवं हैसियत पूछताछ करने वाले अथवा साख एवं प्रस्थिति जानने हेतु पत्र, शिकायती पत्र, वसूली पत्रा, विक्रय पत्र, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दाबली,

अध्याय 13 :प्रतिवेदन लेखन

प्रतिवेदन से आशय, प्रतिवेदन के लक्षण, प्रतिवेदनों के प्रकार, कार्य के आधर पर, विषय–सामग्री, व्यावसायिक रिपोर्ट तैयार करने के चरण, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

अध्याय 14 :प्रस्तुतीकरण

व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण, समूह प्रस्तुतीकरण, प्रस्तुतीकरण के भेद, प्रभावी प्रस्तुतीकरण, प्रस्तुतीकरण हेतु तैयारी, प्रस्तुतीकरण क्यों?, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

खण्ड . IV

अध्याय 15 :अशाब्दिक संचार

सांकेतिक संचार के लक्षण, सांकेतिक संचार का महत्व, सांकेतिक संचार के कार्य, सांकेतिक संचार के संघटक या तत्व, मौखिक एवं सांकेतिक संचार, सांकतिक एवं मौखिक संचार में भेद, सीमाएँ, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

अध्याय 16 :प्रभावी श्रवणता

श्रवणता का आशय, श्रवणता के प्रकार, श्रवणता की महत्ता, श्रवणता के उद्देश्य, अच्छे श्रोता के लक्षण, प्रभावी श्रवणता की मुख्य बातें, प्रभावशाली श्रवणता के मुख्य सि(ान्त, श्रवणता में आने वाली बाधएँ, प्रभावी श्रवणता हेतु सुझाव, प्रभावपूर्ण लिखित श्रवणता, प्रभावी मौखिक श्रवणता, प्रभावपूर्ण दृश्य श्रवणता, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

अध्याय 17 :साक्षात्कार दक्षता एवं नौकरी हेतु आवेदन

साक्षात्कार के लाभ, साक्षात्कार के प्रकार, साक्षात्कार की तैयारी, साक्षात्कार की सपफलता हेतु सुझाव, आत्म–सार, विषय–सामग्री, प्रभावशाली आत्म–सार कैसे लिखा जाता है?, आवेदन–पत्र का आशय, आवेदन–पत्र के तत्व, प्राध्यापक पद हेतु आवेदन का नमूना, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली,

अध्याय 18 :संचार के आधुनिक रूप

ई–मेल, वीडियो कान्फ्रेन्सिंग, फैक्स, इटरनेट, सारांश,

अध्याय 19 :अन्तर्राष्ट्रीय संचार

ई–कॉमर्स, कार्य–प्रणाली या अनुपयोग, भुगतान प्रणाली, ई–कामर्स के लाभ, खतरे तथा सुरक्षा, सारांश,

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
BSSCU CG Bilaspur

मानव संसाधन प्रबंधन
(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड . I

अध्याय 1 :मानव संसाधन प्रबन्धन

अध्याय 2 :भर्ती, चयन एवं नियुक्ति

अध्याय 3 :प्रशिक्षण

अध्याय 4 :निष्पादन मूल्यांकन

अध्याय 5 :स्थानांतरण, पदोन्नति, पदावनति,पदच्युति, बर्खास्तगी एवं घरेलू पूछताछ

खण्ड . II

अध्याय 6 :कार्य मूल्यांकन

अध्याय 7 :अभिप्रेरणा

अध्याय 8 :मनोबल और कार्य से संतुष्टि

अध्याय 9 :व्यवहार विज्ञान की उत्पत्ति

अध्याय 10 :सामूहिक व्यवहार

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU CG Bilaspur

खण्ड . III

अध्याय 11 :कुण्ठा

अध्याय 12 :अनुपस्थिति एवं अनुशासन

अध्याय 13 :सीखना और तनाव

अध्याय 14 :संगठनात्मक परिवर्तन

अध्याय 15 :प्रबंधन विकास

खण्ड . IV

अध्याय 16 :कार्य–जीवन की गुणवत्ता

अध्याय 17 :परिवेदना एवं श्रम संघ

अध्याय 18 :सामूहिक सौदेबाजी

अध्याय 19 :कर्मचारी लाभ

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

VERIFIED

बी. ए. अन्तिम वर्ष

विपणन प्रबंधन

(प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय - 1 विपणन : प्रकृति, क्षेत्र, महत्व तथा विचारधाराएँ

बाजार क्या है?, विपणनकर्त्ता कौन होता है?, विपणन का आशय एवं परिभाषाएँ, लक्षण/प्रकृति, किसका विपणन किया जा सकता है?, विपणन का महत्व, विपणन का कार्यक्षेत्र, विपणन तथा जीवन-स्तर, सामाजिक विपणन, विपणन एवं विक्रय में अन्तर, विपणन प्रबन्ध : आशय एवं परिभाषाएँ, विपणन प्रबन्ध का क्षेत्र, विपणन प्रबन्ध एवं विक्रय प्रबन्ध में अन्तर, विपणन अवधारणा, विपणन अवधारणा का विकास, विपणन की आधुनिक अवधारणा, मान्यताएँ, विपणन की आधुनिक एवं प्राचीन अवधानणा में अन्तर, सामाजिक विपणन अवधारणा तथा विपणन अवधारणा में अन्तर।

अध्याय - 2 विपणन मिश्र एवं विपणन वातावरण

विपणन मिश्रण के तत्व, विपणन वातावरण, आन्तरिक वातावरण, बाह्य वातारवण, विपणन वातावरण के अध्ययन का महत्व, विपणन वातावरण की प्रकृति।

अध्याय - 3 उपभोक्ता व्यवहार : प्रकृति, क्षेत्र व महत्व

उपभोक्ता व्यवहार : आशय एवं परिभाषाएँ, क्रेता-व्यवहार का महत्व, उपभोक्ता व्यवहार का स्वभाव, प्रभावित करने वाले कारक, उपभोक्ता व्यवहार के अध्ययन की रीतियाँ, क्रय-निर्णय प्रक्रिया, उपभोक्ता व्यवहार के प्रतिरूप, संगठनात्मक क्रय व्यवहार, संगठनात्मक क्रय निर्णय प्रक्रिया, क्रय प्रेरणाएँ, क्रय प्रेरणाओं के प्रकार, क्रय प्रेरणाओं को तय करने में बाधाएँ, क्रय प्रेरणाओं की जानकारी का महत्व, संगठनात्मक क्रय व्यवहार तथा व्यक्तिगत क्रय व्यवहार में अन्तर।

अध्याय - 4 बाजार विभक्तिकरण: अवधारणा, महत्व एवं आधार

बाजार विभक्तिकरण: आशय एवं परिभाषाएँ, बाजार विभक्तिकरण के उद्देश्य, बाजार विभक्तिकरण के विकास के कारण, बाजार विभक्तिकरण के आधार, बाजार विभक्तिकरण के लाभ, बाजार विभक्तिकरण सम्बन्धी रणनीतियाँ, बाजार विभक्तिकरण के आवश्यक तत्व, लक्ष्य बाजार रणनीति पर प्रभाव डालने वाले कारक, बाजार विभक्तिकरण की विधियाँ, वस्तु भिन्नता तथा बाजार विभक्तिकरण के अन्तर।

VERIFIED

खण्ड - II

अध्याय - 5 उत्पाद : अवधारणा, उपभोक्ता एवं औद्योगिक माल तथा उत्पाद जीवन चक्र

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

उत्पाद: आशय एवं परिभाषाएँ, उत्पादक वर्गीकरण, उत्पाद जीवन-चक्र, उत्पाद जीवन-चक्र पर प्रभाव डालने वाले कारक, उत्पाद में सुधार तथा उत्पाद जीवन-चक्र, उत्पाद जीवन-चक्र पर प्रभाव डालने वाले कारक, गुण/ महत्व, औद्योगिक उत्पाद तथा उपभोक्ता उत्पाद में भिन्नता, उत्पाद रणनीतियाँ, उत्पाद के गुण, उत्पाद निर्णय, उत्पाद मिश्रण पर प्रभाव डालने वाले कारक, नये उत्पादों का वर्गीकरण।

अध्याय - 6 उत्पाद नियोजन एवं विकास

उत्पाद नियोजन क्या है?, वस्तु नियोजन की उपयोगिता, उत्पाद अप्रचलन, उत्पाद विकास: आशय एवं परिभाषाएं, उत्पाद विकास का महत्व, उत्पाद विकास के सिद्धान्त, उत्पाद विकास की प्रक्रिया, उत्पाद परित्याग, उत्पाद संशोधन, उत्पाद नवकरण, उत्पाद नवकरण के लिए उत्तरदायी कारण, सफल उत्पाद नवकरण हेतु आवश्यक दशाएँ, वस्तु नियोजन हेतु संगठन, उत्पाद विकास के स्त्रोत, उत्पाद अनुकूलन, उपभोक्ता वर्ग का वर्गीकरण, उपभोक्ता अनुकूलन: प्रक्रिया।

अध्याय - 7 पैकेजिंग, ब्राण्ड नाम व व्यापार चिन्ह तथा विक्रयोपरान्त सेवा

पैकेजिंग के उद्देश्य, पैकेजिंग के उद्देश्य, पैकेजिंग के कार्य, पैकेजिंग की उपयोगिता, पैकेजिंग के विभिन्न स्तर, पैकेजिंग निर्णय, पैकेजिंग में परिवर्तन करना, अच्छे पैकेज की मुख्य बातें, पैकेजिंग के प्रकार, ब्राण्ड एवं व्यापार चिन्ह, अच्छे ब्राण्ड नाम की विशेषता एँ, ब्राण्ड के गुण, ब्राण्ड तथा ट्रेडमार्क, ब्राण्ड तय करना, ब्राण्ड परीक्षण, लेबल लगाना, विक्रयोपरान्त सेवा, विक्रय अवरोध।

अध्याय - 8 मूल्य : विपणन मिश्रण में मूल्य का महत्व, प्रभावित करने वाले कारक बट्टा व छूट

मूल्य क्या होता है?, मूल्य निर्धारण का महत्व, प्रभावित करने वाले कारक, मूल्य व्यूह रचना/नीतियाँ, मूल्यन प्रक्रिया, मूल्यन के ढंग, मूल्यन हेतु वांछित सूचनाएँ, पुन: विक्रय मूल्यन, बट्टा व छूट।

खण्ड - III

अध्याय - 9 वितरण माध्यम : अवधारणा, भूमिका, प्रकार एवं प्रभावित करने वाले कारक

आशय एवं परिभाषाएँ, वितरण वाहिका के गुण, वितरण वाहिकाओं की भूमिका का कार्य, फर्म द्वारा मध्यस्थों को काम में लाने के कारण, वितरण वाहिकाएं : प्रकार, वितरण वाहिका का चयन, वाहिका निर्णयन व अभिकल्पन, विपणि विस्तार, विपणन मध्यस्थ, वितरण नीतियाँ, एकमात्र एजेन्सी या डीलरशिप।

अध्याय - 10 थोक तथा फुटकर विक्रेता

VERIFIED

थोक व्यापारी, कार्य, वर्गीकरण, क्या थोक व्यापारियों को हटा देना चाहिए?, फुटकर विक्रेता, फुटकर विक्रेता के कार्य, उत्पादकों द्वारा फुटकर बिक्री, भविष्य, फुटकर

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PGSOU, CG Bilaspur

विक्रेताओं के प्रकार, फुटकर व्यापार की सफलता हेतु आवश्यक बातें, बहुविकल्प शाला, विभागीय भण्डार।

अध्याय - 11 भौतिक वितरण, परिवहन, भण्डारण, स्कन्ध नियन्त्रण एवं आदेश प्रसंस्करण

भौतिक वितरण: आशय एवं परिभाषाएँ, भौतिक वितरण के महत्व में वृद्धि के कारण, भौतिक वितरण के संघटक।

अध्याय - 12 संवर्द्धन : विधियाँ एवं अनुकूलतम उत्पाद मिश्रण

संवर्द्धन अथवा प्रवर्तन का आशय एवं परिभाषाएँ, संप्रेषण निर्णय, सम्प्रेषण र्द्धन के उद्देश्य, संवर्द्धन निर्णय, संवर्द्धन मिश्रण निर्णय लेना, संवर्द्धन की भूमिका, प्रभाव डालने की भूमिका, अनुकूलतम संवर्द्धन मिश्रण, संवर्द्धन के उपकरणों में अन्तर।

खण्ड - IV

अध्याय - 13 विज्ञापन माध्यम : गुण एवं सीमाएँ एवं प्रभावी विज्ञापन की विशेषताएँ

विज्ञापन का आशय एवं परिभाषाएँ, विशेषताएँ, विज्ञापन के लाभ, विज्ञापन के प्रति आरोप, विज्ञापन के उद्देश्य, विज्ञापन माध्यम, मीडिया माध्यम एवं व्यय, विज्ञापन माध्यम के चुनाव को प्रभावित करने वाले तत्व, विज्ञापन प्रभावोत्पादकता मापन के ढंग।

अध्याय - 14 वैयक्तिक विक्रय

वैयक्तिक विक्रय: आशय एवं परिभाषाएँ, वैयक्तिक विक्रय की विशेषताएँ, उद्देश्य, वैयक्तिक विक्रय के विभिन्न लाभ, वैयक्तिक विक्रयकर्ताओं के प्रकार, वैयक्तिक विक्र य के कार्य, वैयक्तिक विक्रय के दोष, बाजार में वैयक्तिक विक्रय की प्रक्रिया, वैयक्ति क विक्रय के ढंग, वैयक्तिक विक्रेता के गुण, सफल विक्रयकर्ता पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते, प्रचार, विज्ञापन तथा वैयक्तिक विक्रय में अन्तर, विज्ञापन विक्रय संवर्द्धन वैयक्ति क विक्रय में अन्तर।

अध्याय - 15 विक्रयण : एक पेशा, विक्रयकर्ताओं का वर्गीकरण एवं कार्य

विक्रय से पूर्व विषय या प्रक्रिया, विक्रय रुकावटों को दूर करना अथवा विक्रय कठिनाइयों को दूर करने के उपाय, ग्राहक द्वारा जाँच या परीक्षा, विक्रय समाप्ति, विक्रय कर्ता का अर्थ एवं परिभाषा, विक्रयकर्ता का महत्व, एक विक्रयकर्ता के कार्य या कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व, विक्रयकर्ताओं के प्रकार, यात्री विक्रेता एवं काउण्टर विक्रयकर्ताओं में अन्तर, विक्रय: एक पेशा।

VERIFIED
Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PRSOU CG Bilaspur

वित्तीय प्रबन्ध

(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय 1 : वित्तीय प्रबंध : एक परिचय

इतिहास एवं विकास, अर्थ एवं परिभाषा, महत्व, प्रकृति, सीमाएँ, अवधारणाएँ, वित्तीय प्रबन्ध के कार्य

अध्याय 2 : पूँजी बजटन – I

पूँजी बजटन का अर्थ एवं परिभाषायें, पूँजी बजटन के उद्देश्य, पूँजी बजटन की मुख्य विशेषतायें, पूँजी व्यय या पूँजी परियोजनाओं के प्रकार, पूँजी बजटन की प्रक्रिया, पूँजी बजटन के महत्त्वपूर्ण घटक, पूँजी बजटन का महत्व, पूँजी बजटन की सीमाएँ

अध्याय 3 : पूँजी बजटन – II

पूँजी बजटन प्रविधियाँ, परम्परागत विधियाँ, अपरिहार्यत विधि, अदायगी अवधि विधि, औसत प्रत्याय दर विधि, अपहरित रोकड़ प्रवाह विधियाँ, शुद्ध वर्तमान मूल्य विधि, वर्तमान मूल्य सूचकांक या लाभदायकता सूचकांक विधि, आंतरिक प्रत्याय दर विधि, अन्य विधियाँ

खण्ड - II

अध्याय 4 : पूँजी की लागत

पूँजी की लागत का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पूँजी की लागत की विशेषताएँ, पूँजी की लागत की अवधारणा का महत्व, पूँजी की लागत का वर्गीकरण, पूँजी की लागत की गणना

अध्याय 5 : परिचालन एवं वित्तीय उत्तोलक

अर्थ, परिभाषा, उत्तोलक के प्रकार, परिचालन उत्तोलक, वित्तीय उत्तोलक, संयुक्त उत्तोलक, उदाहरण

खण्ड - III

अध्याय 6 : पूँजी संरचना: सिद्धान्त एवं निर्धारण करने वाले तत्व

शुद्ध आय सिद्धान्त, शुद्ध परिचालन आय सिद्धान्त, परम्परागत सिद्धान्त, मोदीग्लियानी-मिलर सिद्धान्त, पूँजी संरचना का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पूँजी संरचना, वित्तीय संरचना तथा सम्पत्ति संरचना , पूँजी संरचना को प्रभावित करने वाले तत्व, संतुलित या अनुकूलतम पूँजी संरचना, क्या अनुकूलतम पूँजी संरचना एक मिथक/कल्पना है?, पूँजी संरचना का नियोजन या निर्णयन, समता पर व्यापार, पूँजी दन्तिकरण, पूँजी की लागत

अध्याय 7 : लाभांश नीतियाँ

लाभांश का अर्थ एवं परिभाषाएं, लाभांश घोषणा एवं वितरण के सम्बन्ध में भारतीय कम्पनी अधिनियम के प्रावधान, प्रावधान, लाभांश के प्रकार, बोनस अंश या स्कन्ध लाभांश, लाभांश नीति का अर्थ, एक सुदृढ़ लाभांश नीति के आवश्यक तत्व, लाभांश नीति का निर्धारण एवं प्रकार, सुस्थिर लाभांश नीति के लाभ, सुस्थिर लाभांश-नीति का निर्माण, लाभांश नीति को प्रभावित करने वाले तत्व, लाभांश की प्रासंगिकता एवं लाभांश प्रमेय, समीक्षा, गॉर्डन फार्मूला अथवा प्रमेय

VERIFIED

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
PSSOU, CG Bilaspur

खण्ड - IV

अध्याय 8 : कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध

कार्यशील पूँजी के प्रकार, कार्यशील पूँजी का महत्व, आवश्यकता से अधिक कार्यशील पूँजी के दोष, कार्यशील पूँजी के स्त्रोत, कार्यशील पूँजी के मात्रा के निर्धारक घटक, कार्यशील पूँजी का अनुमान लगाने की विधियाँ, बैंकों द्वारा कार्यशील पूँजी के निर्धारण में शिथिलता

अध्याय 9 : रोकड़ का प्रबन्ध

नकद/रोकड़ कोषों की आवश्यकता, रोकड़ स्तर को निर्धारित करने वाले तत्व, रोकड़ प्रबन्ध के उद्देश्य, रोकड़ प्रबन्ध के लाभ, रोकड़ प्रबन्ध के दोष, रोकड़ प्रबन्ध के कार्य

अध्याय 10 : प्राप्यों का प्रबन्ध

अर्थ एवं परिभाषा, आवश्यकता, क्षेत्र, उदाहरण

अध्याय 11 : स्कन्ध प्रबन्ध

स्कन्ध नियंत्रण का अर्थ एवं परिभाषा, स्कन्ध नियंत्रण प्रणाली की सारभूत आवश्यकताएँ, स्कन्ध प्रबन्ध के उद्देश्य, स्कन्ध नियंत्रण के लाभ, स्कन्ध को प्रभावित करने वाले तत्व, स्कन्ध निर्धारण के विभिन्न स्तर, स्कन्ध नियंत्रण की 'ए.बी.सी.' प्रणाली, पुनः आदेश मात्रा अथवा आर्थिक आदेश मात्रा, सामग्री अथवा स्कन्ध आवर्त, स्कन्ध नियंत्रण की न्यूनतम व अधिकतम प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की आदेश चक्र प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की बजटरी नियंत्रण प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की दविबिन प्रणाली, स्कन्ध नियंत्रण की भौतिक गणन पद्धतियाँ (1) निरन्तर गणना प्रणाली (2) सामयिक गणना प्रणाली

Dr. Anita Singh
Incharge NAAC Criteria-I
VERIFIED PSSOU, CG Bilaspur

REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)